पाठ पहला

णमोकार मंत्र

णमो अरहंताणं,
णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं।।

लोक में सब अरहंतों को नमस्कार हो, सब सिद्धों को नमस्कार हो, सब आचार्यों को नमस्कार हो, सब उपाध्यायों को नमस्कार हो और सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

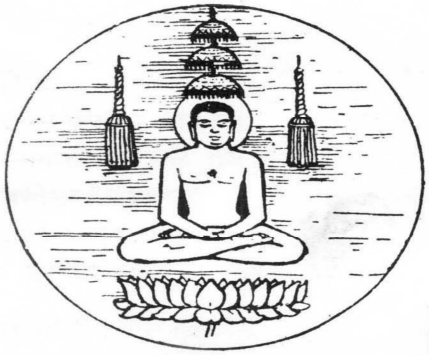

अरहंत परमेष्ठी

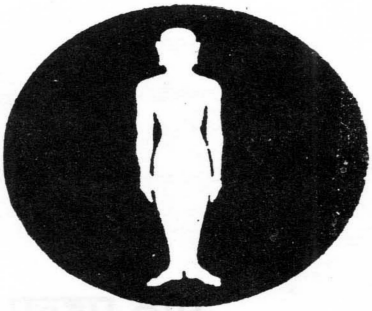

सिद्ध परमेष्ठी

आचार्य परमेष्ठी

उपाध्याय परमेष्ठी

साधु परमेष्ठी

णमोकार मंत्र की महिमा

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवई मंगलम्।।

यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है तथा सब मंगलों में पहला मंगल है।

यह मंत्र मोह–राग–द्वेषका अभाव करने वाला और सम्यग्ज्ञान प्राप्त कराने वाला है।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पाँचों परमेष्ठी कहलाते है। जो जीव इन पाँचों परमेष्ठीयों को पहिचान कर उनके बताये हुए मार्ग पर चलता है उसे सच्चा सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न -

१. णमोकार मंत्र शुद्ध बोलिए।

२. इस मंत्र में किसको नमस्कार किया गया है।

३. इस मंत्र के स्मरण से क्या लाभ हैं?

४. पंच परमेष्ठियों के नाम बताइये।

५. सच्चा सुख कैसे प्राप्त होता है?